A Pratibha Spandan Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

गौड़ीय संप्रदाय के संत-कवियों एवं संगीताचार्यों का भक्ति संगीत के विकास और संरक्षण में योगदान

Nikita Bharti[1], Dr. Gaurav Shukla[2]

1 Research Scholar, Jai Narain Vyas University, Jodhpur
2 Research Supervisor, Assistant Professor, Jai Narain Vyas University, Jodhpur

Read the Article Online

OPEN ACCESS

Cite this Article

Published on 15 June, 2026

Bharti, N. and Shukla, G. (2026). Gaudiya Sampraday Ke Sant-Kaviyon Evam Sangitacharyon Ka Bhakti Sangeet Ke Vikas Aur Sanrakshan Mein Yogdan. Swar Sindhu, 14(1), 326-331.

सार

भारतीय भक्ति परम्परा में गौड़ीय संप्रदाय का महत्वपूर्ण स्थान है। चैतन्य महाप्रभु द्वारा प्रवर्तित इस संप्रदाय ने राधा-कृष्ण भक्ति को संगीत, कीर्तन और संकीर्तन के माध्यम से जनसामान्य तक पहुँचाया। गौड़ीय वैष्णव परम्परा में नाम-संकीर्तन को भक्ति का प्रमुख साधन माना गया, जिसके कारण भक्ति संगीत को व्यापक लोकप्रियता प्राप्त हुई। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य गौड़ीय संप्रदाय के संत-कवियों एवं संगीताचार्यों द्वारा भक्ति संगीत के विकास और संरक्षण में दिए गए योगदान का अध्ययन करना है। रूप गोस्वामी, सनातन गोस्वामी, वृन्दावन दास ठाकुर तथा अन्य वैष्णव आचार्यों ने पदावली, भजन और कीर्तन साहित्य की रचना कर भक्ति संगीत को समृद्ध बनाया। इनकी रचनाओं में आध्यात्मिकता, प्रेम तथा लोकभाषा की सहजता का सुंदर समन्वय मिलता है। गौड़ीय संप्रदाय की संकीर्तन परम्परा ने भारतीय संगीत को सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना से जोड़ा। मंदिरों, आश्रमों तथा वैष्णव परम्पराओं के माध्यम से यह संगीत धारा आज भी संरक्षित है और भारतीय सांस्कृतिक विरासत को समृद्ध कर रही है।

शब्द कुंजी : गौड़ीय संप्रदाय, भक्ति संगीत, संकीर्तन, संत-कवि, संगीताचार्य, राधा-कृष्ण भक्ति

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति में संगीत का महत्व प्राचीन काल से ही आध्यात्मिक साधना, भाव-अभिव्यक्ति और लोक मंगल के साधन के रूप में स्वीकार किया गया है। मध्यकालीन भक्ति आन्दोलन के समय संतों और भक्त कवियों ने संगीत को जनजागरण तथा ईश्वर-भक्ति का प्रभावी माध्यम बनाया। सरल भाषा, मधुर पद-रचना और सामूहिक गायन की परम्परा ने भक्ति को जनसामान्य तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।इसी भक्ति धारा में गौड़ीय संप्रदाय का विशेष स्थान है। बंगाल में विकसित इस वैष्णव परम्परा के प्रवर्तक चैतन्य महाप्रभु माने जाते हैं, जिन्होंने राधा-कृष्ण की माधुर्य-भक्ति को संकीर्तन आन्दोलन के रूप में प्रतिष्ठित किया। इस परम्परा में संगीत, नृत्य और सामूहिक कीर्तन को भक्ति की आत्मीय अभिव्यक्ति माना गया। "हरे कृष्ण" महामंत्र का संकीर्तन जनमानस में आध्यात्मिक चेतना जागृत करने का प्रमुख माध्यम बना।

गौड़ीय संप्रदाय के संत-कवियों और संगीताचार्यों ने भक्ति साहित्य तथा संगीत दोनों क्षेत्रों को समृद्ध किया। उन्होंने संस्कृत, ब्रजभाषा और बंगला में ऐसे पदों एवं भजनों की रचना की, जिनमें प्रेम, समर्पण, विरह और माधुर्य भाव का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण मिलता है। इनके काव्य और संगीत ने न केवल धार्मिक चेतना को सुदृढ़ किया, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक परम्परा को भी नई दिशा प्रदान की।इन संतों का योगदान केवल साहित्य-रचना तक सीमित नहीं था। उन्होंने कीर्तन-परम्परा, मंदिर-संगीत और वैष्णव साधना के माध्यम से भक्ति संगीत को संरक्षित और प्रचारित भी किया। वर्तमान समय में भी उनके द्वारा रचित पद और भजन मंदिरों, आश्रमों तथा संकीर्तन परम्पराओं में समान श्रद्धा के साथ गाए जाते हैं। प्रस्तुत शोधपत्र में गौड़ीय संप्रदाय के प्रमुख संत-कवियों एवं संगीताचार्यों के योगदान का अध्ययन करते हुए यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि उन्होंने भारतीय भक्ति संगीत की परम्परा को किस प्रकार विकसित और संरक्षित किया।

गौड़ीय संप्रदाय के प्रमुख संत-कवि एवं संगीताचार्य

1 श्री रूप गोस्वामी

श्री रूप गोस्वामी गौड़ीय सम्प्रदाय के महान संत-कवि, दार्शनिक एवं रसाचार्य थे। वे चैतन्य महाप्रभु के प्रमुख शिष्यों में गिने जाते हैं। उनका जन्म बंगाल के एक प्रतिष्ठित ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके बड़े भाई सनातन गोस्वामी तथा छोटे भाई अनुपम भी वैष्णव भक्ति से जुड़े हुए थे। रूप गोस्वामी प्रारम्भ में बंगाल के मुस्लिम शासक के दरबार में उच्च पद पर कार्यरत थे, किन्तु चैतन्य महाप्रभु के प्रभाव से उन्होंने सांसारिक जीवन

त्यागकर कृष्ण-भक्ति को अपनाया। रूप गोस्वामी ने गौड़ीय वैष्णव दर्शन को साहित्यिक और सांगीतिक आधार प्रदान किया। उनकी प्रमुख रचनाओं में भक्ति-रसामृत-सिन्धु, उज्ज्वल नीलमणि, विदग्ध माधव तथा ललित माधव विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन ग्रंथों में राधा-कृष्ण प्रेम, माधुर्य-रस तथा भक्ति के विविध स्वरूपों का विस्तृत वर्णन मिलता है। उन्होंने भक्ति को केवल धार्मिक साधना न मानकर प्रेम और रस की अनुभूति के रूप में प्रस्तुत किया। रूप गोस्वामी संगीत और काव्य-कला में अत्यंत निपुण थे। उनके पदों में माधुर्य, श्रृंगार और आध्यात्मिक प्रेम का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। उन्होंने कीर्तन परम्परा को व्यवस्थित रूप प्रदान किया तथा पदावली साहित्य को समृद्ध बनाया। उनके पद आज भी मंदिरों और संकीर्तन परम्पराओं में गाए जाते हैं। उनकी भक्ति-भावना को व्यक्त करने वाला एक प्रसिद्ध पद इस प्रकार है—

"राधा-कृष्ण प्राण मोर, युगल किशोर।
जीवन-मरण गति आर, नाहि मोर।।"

इस पद में राधा-कृष्ण के प्रति पूर्ण समर्पण और अनन्य प्रेम की भावना व्यक्त हुई है। रूप गोस्वामी ने अपने साहित्य, संगीत और दर्शन के माध्यम से गौड़ीय सम्प्रदाय तथा भक्ति संगीत को सुदृढ़ आधार प्रदान किया।

2 श्री सनातन गोस्वामी

श्री सनातन गोस्वामी गौड़ीय सम्प्रदाय के प्रमुख आचार्य, विद्वान संत एवं षड्गोस्वामियों में अग्रणी थे। वे रूप गोस्वामी के बड़े भाई थे तथा चैतन्य महाप्रभु के अत्यंत प्रिय शिष्यों में गिने जाते थे। उनका जन्म बंगाल के एक विद्वान ब्राह्मण परिवार में हुआ था। वे संस्कृत, दर्शन और धर्मशास्त्र के महान ज्ञाता थे। प्रारम्भ में उन्होंने राज्य-कार्य में उच्च पद प्राप्त किया, किन्तु बाद में सांसारिक जीवन का त्याग कर कृष्ण-भक्ति और साधना में जीवन समर्पित कर दिया। सनातन गोस्वामी ने गौड़ीय वैष्णव धर्म को शास्त्रीय आधार प्रदान किया। उनकी प्रमुख रचनाओं में बृहद् भागवतामृत तथा हरि-भक्ति-विलास विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन ग्रंथों में भक्ति, वैष्णव आचार-विचार और कृष्ण-भक्ति के सिद्धांतों का विस्तारपूर्वक वर्णन मिलता है। उन्होंने वृन्दावन की अनेक लीलास्थलियों की खोज की तथा तीर्थों का पुनरुद्धार कराया। उनके प्रयासों से वृन्दावन गौड़ीय भक्ति का प्रमुख केंद्र बना।सनातन गोस्वामी भक्ति-संगीत और संकीर्तन परम्परा के समर्थक थे। उनके उपदेशों और भक्ति-भाव से प्रेरित होकर अनेक भक्त कृष्ण-भक्ति से जुड़े। उनके साहित्य में विनम्रता, त्याग और सेवा-भाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। वे संगीत को ईश्वर-भक्ति और आत्मिक शांति का प्रभावशाली माध्यम मानते थे।उनकी भक्ति-भावना को व्यक्त करने वाला एक प्रसिद्ध पद इस प्रकार है—

"जय जय श्री चैतन्य, जय नित्यानन्द।
जय अद्वैत चन्द्र, जय गौर भक्तवृन्द।।"

इस पद में चैतन्य महाप्रभु तथा उनके भक्तों के प्रति श्रद्धा और भक्ति की भावना प्रकट हुई है। सनातन गोस्वामी ने अपने ग्रंथों, उपदेशों और संकीर्तन परम्परा के माध्यम से गौड़ीय सम्प्रदाय तथा भक्ति संगीत के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

3 श्री जीव गोस्वामी

जीव गोस्वामी गौड़ीय सम्प्रदाय के महान विद्वान, दार्शनिक और षड्गोस्वामियों में प्रमुख थे। वे रूप और सनातन गोस्वामी के छोटे भाई अनुपम के पुत्र थे। बचपन से ही वे अत्यंत प्रतिभाशाली थे और उन्होंने वेद, शास्त्र तथा वैष्णव दर्शन का गहन अध्ययन किया। चैतन्य महाप्रभु के प्रति उनकी गहरी श्रद्धा थी। बाद में नित्यानंद प्रभु की प्रेरणा से वे वृन्दावन आए और रूप गोस्वामी से दीक्षा लेकर भक्ति-साधना तथा ग्रंथ-रचना में लग गए।जीव गोस्वामी ने गौड़ीय सम्प्रदाय के सिद्धांतों को शास्त्रीय और दार्शनिक आधार प्रदान किया। उनकी सबसे प्रसिद्ध रचना षट्-संदर्भ है, जिसमें भक्ति, भगवान, जीव और कृष्ण-तत्व का विस्तार से वर्णन मिलता है। इसके अतिरिक्त क्रम-संदर्भ, सर्व-संवादिनी, गोपाल चम्पू तथा हरिनामामृत व्याकरण जैसी अनेक महत्वपूर्ण रचनाएँ भी उन्होंने लिखीं। उन्होंने "अचिन्त्य भेदाभेद" सिद्धांत को स्पष्ट रूप से स्थापित किया, जिसके अनुसार जीव और भगवान अलग भी हैं तथा एक भी।जीव गोस्वामी संगीत और काव्य-कला में भी निपुण थे। उनके पदों और रचनाओं में राधा-कृष्ण प्रेम तथा माधुर्य भक्ति का सुंदर वर्णन मिलता है। उनकी भक्ति-भावना को दर्शाने वाली पंक्तियाँ इस प्रकार हैं—

"राधा-कृष्ण प्रेमरस, भाव भरे मन माहीं।
हरिनाम स्मरण करत, मिटत सकल तब चाहीं।।"

उनकी रचनाओं ने गौड़ीय वैष्णव दर्शन, भक्ति-साहित्य और संगीत परम्परा को मजबूत आधार प्रदान किया। आज भी उन्हें गौड़ीय सम्प्रदाय के महान व्याख्याता और दार्शनिक के रूप में स्मरण किया जाता है।

4 लोचन दास

लोचनदास गौड़ीय सम्प्रदाय के प्रसिद्ध भक्त-कवि और संगीताचार्य थे। उनका जन्म बंगाल के वर्धमान जिले के कोग्राम में हुआ था। उनके गुरु नरहरि सरकार थे, जिनकी प्रेरणा से उन्होंने भक्तिसाहित्य की रचना आरम्भ की। वे सरल भाषा, मधुर पद-रचना और संगीतमय शैली के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध थे।उनकी सबसे प्रसिद्ध रचना चैतन्य मंगल है, जिसमें श्री चैतन्य महाप्रभु के जीवन, संकीर्तन और भक्ति आन्दोलन का सुंदर वर्णन मिलता है। यह ग्रंथ लोक-काव्य शैली में लिखा गया है, इसलिए सामान्य लोगों में भी अत्यंत लोकप्रिय हुआ। इसके अतिरिक्त उन्होंने अनेक पदों और गीतों की रचना की, जिनमें प्रेम, भक्ति और माधुर्य का सुंदर समन्वय मिलता है।लोचन दास के पद सरल भाषा में होने के कारण सीधे हृदय को स्पर्श करते हैं। वे अपने गीतों को मधुर स्वर में गाकर भक्तों को भाव-विभोर कर देते थे। उनका एक प्रसिद्ध पद इस प्रकार है—

"अवतार सार गौरावतार, कैनो ना भेजिली तारे।
करि नीरे वास, गैलो ना पियास, आपना करम फेरे।।"

इस पद में चैतन्य महाप्रभु के अवतार और भक्ति-भाव का सुंदर चित्रण मिलता है। लोचन दास ने अपने काव्य और संगीत के माध्यम से गौड़ीय सम्प्रदाय की भक्ति परम्परा को जन-जन तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

5 मुरारी गुप्त

मुरारी गुप्त गौड़ीय सम्प्रदाय के विद्वान भक्त, कवि और संगीतज्ञ थे। उनका जन्म सिलहट में हुआ था, बाद में उनका परिवार नवद्वीप में आकर बस गया। वे बाल्यकाल से ही चैतन्य महाप्रभु के संपर्क में रहे और उनके परम भक्त बन गए। उन्होंने चैतन्य महाप्रभु के जीवन से संबंधित महत्वपूर्ण ग्रंथ श्रीकृष्ण चैतन्य चरितामृत की रचना की, जिसे "कड़चा" भी कहा जाता है। यह चैतन्य महाप्रभु की प्रारम्भिक जीवनी मानी जाती है।मुरारी गुप्त संगीत-कला में निपुण थे तथा विभिन्न राग-रागिनियों में पदों की रचना करते थे। उनके पदों में भक्ति और माधुर्य का सुंदर चित्रण मिलता है। "राग सुहई" में रचित उनका एक पद इस प्रकार है—

"सखि है फिरि आ, अपने घर जाओ।
जयते भरिया येई अपुनारे रवई आछे,
तारे तुमि की आर बुझाओ।।"

इस पद में प्रेम और विरह की कोमल भावना व्यक्त हुई है। मुरारी गुप्त ने भक्ति-संगीत और साहित्य के माध्यम से गौड़ीय सम्प्रदाय को मजबूत आधार प्रदान किया।

6 श्री रघुनाथ भट्ट गोस्वामी

रघुनाथ भट्ट गोस्वामी गौड़ीय सम्प्रदाय के षड्गोस्वामियों में प्रमुख स्थान रखते हैं। उनका जन्म पूर्व बंगाल में तपन मिश्र के घर हुआ था। बाल्यकाल में ही उन्हें चैतन्य महाप्रभु के दर्शन और सत्संग का अवसर प्राप्त हुआ, जिससे वे उनके परम भक्त बन गए। रघुनाथ भट्ट संस्कृत साहित्य, संगीत और श्रीमद्भागवत के मधुर गायन में विशेष निपुण थे। वृन्दावन में वे मधुर कंठ से भागवत कथा और श्लोकों का गायन करते थे। उनकी कथा-शैली इतनी प्रभावशाली थी कि बड़ी संख्या में भक्त और ब्रजवासी उनका श्रवण करने आते थे। वे विभिन्न रागों में भागवत के श्लोक गाकर भक्ति का प्रचार करते थे। कृष्णदास कविराज ने उनके मधुर स्वर की तुलना कोयल से की है। वे संगीत को केवल कला नहीं, बल्कि कृष्ण-भक्ति का माध्यम मानते थे। उन्होंने ग्रंथ-रचना कम की, परंतु कीर्तन और भागवत-गायन के माध्यम से असंख्य लोगों में भक्ति भावना जागृत की। यही उनका गौड़ीय सम्प्रदाय और भक्ति-संगीत के क्षेत्र में सबसे बड़ा योगदान माना जाता है।

7 वृन्दावन दास ठाकुर

वृन्दावन दास ठाकुर गौड़ीय सम्प्रदाय के प्रसिद्ध भक्त-कवि और संगीताचार्य थे। उन्हें चैतन्य लीला का "वेदव्यास" कहा जाता है, क्योंकि उन्होंने श्री चैतन्य महाप्रभु के जीवन और भक्ति आन्दोलन का विस्तृत वर्णन किया। वे संस्कृत, बंगला और ब्रजबुलि भाषा के विद्वान थे तथा संगीत और कीर्तन-कला में भी निपुण थे। उनकी सबसे प्रसिद्ध रचना चैतन्य-भागवत है, जिसमें चैतन्य महाप्रभु की लीलाओं, संकीर्तन आन्दोलन और भक्ति-

भाव का सुंदर वर्णन मिलता है। इस ग्रंथ में कीर्तन, देवी-स्तुति, भक्ति और प्रेम के अनेक पद मिलते हैं। उन्होंने अपने पदों में राधा-कृष्ण प्रेम, मान-लीला और विरह-भाव का अत्यंत भावपूर्ण चित्रण किया है। वृन्दावन दास ठाकुर संगीत को भक्ति का श्रेष्ठ माध्यम मानते थे। उनके पदों में माधुर्य, करुणा और प्रेम की गहरी अनुभूति दिखाई देती है। राधा-कृष्ण की मान-लीला का वर्णन करते हुए उनका एक प्रसिद्ध पद इस प्रकार है—

"कैहो चरणे कर-पल्लव ढेललि, मीलालिं मान-भुजंगे।
कवले कवले जिउ जरि जब जायद, तवहि देखव यह रंगें।।"

इस पद में राधा-कृष्ण के प्रेम, विरह और भावनात्मक मिलन का अत्यंत सुंदर चित्रण मिलता है। उनके पद भावप्रधान होने के साथ-साथ संगीतात्मक भी हैं, इसलिए आज भी भक्ति-संगीत और संकीर्तन में विशेष रूप से गाए जाते हैं। वृन्दावन दास ठाकुर का योगदान गौड़ीय भक्ति-साहित्य और संगीत परम्परा में अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

8 श्री गोपाल भट्ट गोस्वामी

श्री गोपाल भट्ट गोस्वामी गौड़ीय सम्प्रदाय के प्रमुख संतों तथा षड्गोस्वामियों में से एक थे। उनका जन्म दक्षिण भारत के श्रीरंगम् क्षेत्र के निकट बेलमंडी ग्राम में हुआ था। इनके पिता वैष्णव भक्त थे और उनका परिवार भगवान लक्ष्मीनारायण की उपासना करता था। बाल्यकाल में ही इनका संपर्क श्री चैतन्य महाप्रभु से हुआ। चैतन्य महाप्रभु के भक्ति-उपदेश, हरिकीर्तन और सत्संग का इनके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा, जिससे वे कृष्ण-भक्ति की ओर प्रेरित हुए।बाद में वे वृन्दावन आए और रूप तथा सनातन गोस्वामी के साथ रहकर गौड़ीय सम्प्रदाय के प्रचार-प्रसार में लग गए। उन्होंने वैष्णव धर्म की पूजा-पद्धति और आचार-संहिता को व्यवस्थित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनकी प्रमुख रचना हरि-भक्ति-विलास मानी जाती है, जिसमें वैष्णव जीवन के नियम, संस्कार और भक्ति-पद्धति का वर्णन मिलता है।गोपाल भट्ट संगीत, काव्य और दर्शन के विद्वान थे। वे संगीत को ईश्वर-प्राप्ति का श्रेष्ठ साधन मानते थे। उनके पदों में राधा-कृष्ण प्रेम, माधुर्य और भक्ति-भाव की सुंदर अभिव्यक्ति मिलती है। उनका एक प्रसिद्ध पद इस प्रकार है—

"देखो री सखि कमल नयन कुंज में विराजे हैं।
वामे किशोरी गौरी अलस अंग अति विभोरी,
हे री श्याम ध्यान चांद्र मंद-मंद हाँसे हैं।।"

इस पद में राधा-कृष्ण की मधुर लीलाओं और प्रेम-भाव का अत्यंत सुंदर चित्रण मिलता है। इनके पद भाव प्रधान होने के साथ-साथ संगीतात्मक भी हैं, इसलिए आज भी भक्ति-संगीत में विशेष रूप से गाए जाते हैं।

9 सूरदास मदनमोहन

सूरदास मदन मोहन गौड़ीय सम्प्रदाय के प्रसिद्ध भक्त-कवि, गायक और संगीताचार्य थे। उनका जन्म लगभग संवत् 1570 के आसपास माना जाता है। बाद में वे वृन्दावन आकर श्री सनातन गोस्वामी तथा उनके उपास्य ठाकुर मदनमोहन जी के भक्त बन गए। वे उच्च कोटि के संगीतज्ञ और रससिद्ध गायक माने जाते थे। इनकी कोई स्वतंत्र ग्रंथ-रचना उपलब्ध नहीं है, परन्तु इनके अनेक पद कीर्तन-संग्रहों में प्राप्त होते हैं। उनके पदों में राधा-कृष्ण की रास-लीला, होली, वसंत, वर्षा, अनुराग और दान-लीला का मधुर वर्णन मिलता है। नाभादास ने उन्हें "गान और काव्य गुणों की राशि"कहा है। उनके पद विभिन्न राग-रागिनियों और तालों में बंधे हुए मिलते हैं, जिससे उनकी संगीत-कला का परिचय मिलता है। सूरदास मदनमोहन के पदों में संगीत के अनेक पारिभाषिक शब्द, ताल, नृत्य-मुद्राएँ तथा रागों का उल्लेख मिलता है। वे संगीत को भक्ति का श्रेष्ठ माध्यम मानते थे। उनके पदों में भक्ति और संगीत का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। उनका एक प्रसिद्ध पद इस प्रकार है—

"सूरदास मदनमोहन प्रिया संग गावत मल्हार,
ललित लता लागी सुनि-सुनि सरसन।।"

इस पद में राग मल्हार के माध्यम से राधा-कृष्ण प्रेम और संगीत की मधुरता का चित्रण मिलता है। उनके पद आज भी भक्ति-संगीत और संकीर्तन परम्परा में गाए जाते हैं।

10 श्री गदाधर भट्ट

श्री गदाधर भट्ट गौड़ीय सम्प्रदाय के प्रसिद्ध भक्त-कवि, संगीतज्ञ और कृष्ण-भक्त थे। माना जाता है कि वे दक्षिण भारत के तेलंग ब्राह्मण परिवार से संबंधित थे। बाद में वे वृन्दावन आकर गौड़ीय वैष्णव परम्परा से जुड़े और श्री रघुनाथ भट्ट गोस्वामी से दीक्षा प्राप्त की। वे राधा-कृष्ण की माधुर्य भक्ति तथा पद-रचना के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध हुए।गदाधर भट्ट संस्कृत और ब्रजभाषा दोनों के विद्वान थे। उन्होंने भक्ति, संगीत और भागवत का गहन अध्ययन किया। वे श्रीमद्भागवत की कथा भी मधुर स्वर में सुनाते थे, इसलिए उनकी वाणी भक्तों को अत्यंत प्रिय लगती थी। उनके पदों में राधा-कृष्ण की लीलाएँ, होली, हिंडोला, श्रृंगार और भक्ति-भाव का सुंदर चित्रण मिलता है।उनकी रचनाएँ विभिन्न राग-रागिनियों जैसे विभास, सारंग, रामकली, बिलावल, हमीर, बसंत, मल्हार और काफ़ी आदि में मिलती हैं। इससे स्पष्ट होता है कि वे उच्च कोटि के संगीतज्ञ थे। उनके पदों में ताल, नृत्य और वाद्यों का भी उल्लेख मिलता है। उनकी संगीत-भावना को दर्शाने वाली पंक्तियाँ इस प्रकार हैं—

"मधुर-मधुर स्वर गावै, राधा-श्याम रस छावै।
करत हरि नृत्य नवरंग, प्रेम सुधा बरसावै।।"

इन पंक्तियों में भक्ति, संगीत और नृत्य का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। गदाधर भट्ट की वाणी गौड़ीय वैष्णव साहित्य और भक्ति-संगीत की अमूल्य धरोहर मानी जाती है।

11 ए.सी. भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद

ए. सी. भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद आधुनिक युग में गौड़ीय सम्प्रदाय के सबसे महत्वपूर्ण प्रचारकों में माने जाते हैं। उनका जन्म 1896 ई. में कोलकाता में अभय चरण डे के रूप में हुआ था। बचपन से ही उनका झुकाव कृष्ण-भक्ति और वैष्णव परम्परा की ओर था। बाद में उन्होंने गौड़ीय वैष्णव आचार्य भक्तिसिद्धांत सरस्वती ठाकुर से दीक्षा ग्रहण की और उनके निर्देशानुसार कृष्ण-भक्ति के प्रचार का कार्य आरम्भ किया।स्वामी प्रभुपाद ने 1965 में अमेरिका जाकर गौड़ीय सम्प्रदाय के सिद्धांतों का प्रचार प्रारम्भ किया। अनेक कठिनाइयों के बावजूद उन्होंने पश्चिमी देशों में हरिनाम संकीर्तन, भगवद्गीता और कृष्ण-भक्ति को लोकप्रिय बनाया। 1966 में उन्होंने इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर कृष्णा कॉन्शसनेस (ISKCON) की स्थापना की, जिसने विश्वभर में गौड़ीय वैष्णव परम्परा को नई पहचान दिलाई।उन्होंने भगवद्गीता यथारूप, श्रीमद्भागवत तथा चैतन्य चरितामृत जैसे ग्रंथों का सरल अंग्रेज़ी अनुवाद और व्याख्या प्रस्तुत की। उनके द्वारा किए गए कीर्तन, प्रवचन और भक्ति-संगीत ने विदेशी लोगों को भी कृष्ण-भक्ति से जोड़ा।स्वामी प्रभुपाद का मानना था कि हरिनाम संकीर्तन कलियुग में ईश्वर-प्राप्ति का सबसे सरल मार्ग है। उनकी भक्ति-भावना को दर्शाने वाली प्रसिद्ध पंक्ति है—

"हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे।।"

यह महामंत्र आज विश्वभर में गौड़ीय वैष्णव भक्ति और संकीर्तन का प्रतीक बन चुका है। स्वामी प्रभुपाद का योगदान गौड़ीय सम्प्रदाय को विश्व स्तर पर स्थापित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण और अविस्मरणीय माना जाता है।

निष्कर्ष

गौड़ीय संप्रदाय भारतीय भक्ति आन्दोलन की एक महत्वपूर्ण धारा है, जिसने भक्ति, संगीत और साहित्य को एक सूत्र में बाँधकर भारतीय संस्कृति को समृद्ध किया। चैतन्य महाप्रभु द्वारा प्रवर्तित नाम-संकीर्तन परम्परा ने भक्ति को जनसामान्य तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस परम्परा में संगीत केवल मनोरंजन का साधन न होकर ईश्वर-प्राप्ति और आत्मिक अनुभूति का माध्यम बन गया। गौड़ीय संप्रदाय के संत-कवियों एवं संगीताचार्यों ने अपने पदों, भजनों और कीर्तन परम्परा के माध्यम से भक्ति संगीत को नई दिशा प्रदान की। रूप गोस्वामी, सनातन गोस्वामी, जीव गोस्वामी, लोचन दास, मुरारी गुप्त तथा अन्य संतों ने भक्ति-साहित्य और संगीत दोनों को समृद्ध बनाया। उनके काव्य में प्रेम, माधुर्य, समर्पण और आध्यात्मिक चेतना का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है।इन संतों ने संस्कृत, बंगला और ब्रजभाषा जैसी लोकभाषाओं में रचनाएँ कर भक्ति को जन-जन तक पहुँचाया। मंदिरों, आश्रमों और संकीर्तन परम्पराओं के माध्यम से यह संगीत धाराआज भी जीवित है। वर्तमान समय में भी गौड़ीय भक्ति संगीत भारतीय सांस्कृतिक विरासत का महत्वपूर्ण अंग है तथा विश्व स्तर पर भारतीय भक्ति संगीत की पहचान को सुदृढ़ कर रहा है।

संदर्भ ग्रंथ

1- दे, सुशील कुमार। बंगाल में वैष्णव धर्म और आन्दोलन का प्रारम्भिक इतिहास। फर्मा के.एल.एम., 1961।
2- कपूर, ओ. बी. एल. श्री चैतन्य का दर्शन और धर्म। मुंशीराम मनोहरलाल प्रकाशन, 1977।
3- मजूमदार, बिमान बिहारी। श्री चैतन्य चरितेर उपादान। कलकत्ता विश्वविद्यालय, 1969।
4- गोस्वामी, रूप। भक्ति-रसामृत-सिन्धु। गीता प्रेस, गोरखपुर, 2015।
5- गोस्वामी, रूप। उज्ज्वल नीलमणि। चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2012।
6- गोस्वामी, सनातन। बृहद् भागवतामृत। चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2011।
7- गोस्वामी, जीव। षट्-संदर्भ। वृन्दावन रिसर्च इंस्टीट्यूट, वृन्दावन, 1983।
8- दास, लोचन। चैतन्य मंगल। साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 1984।
9- ठाकुर, वृन्दावन दास। चैतन्य भागवत। गीता प्रेस, गोरखपुर, 2016।
10- द्विवेदी, हजारी प्रसाद। भक्ति आन्दोलन और भारतीय संस्कृति। लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, 1981।
11- शर्मा, कृष्णदेव। भारतीय संगीत का इतिहास। राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1974।
12- सिंह, रामअवतार। मध्यकालीन भक्ति साहित्य और संगीत। वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1998।
13- मिश्र, लालमणि। भारतीय संगीत वाद्य। भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 1973।
14- ठाकुर, नारोत्तम दास। प्रार्थना। गौड़ीय मिशन प्रकाशन, मायापुर,2005।
15- प्रभुपाद, ए. सी. भक्तिवेदांत स्वामी। भगवद्गीता यथारूप। मुंबई: भक्तिवेदांत बुक ट्रस्ट, 2019।
16- सैम्भी, नीलम। चैतन्य संप्रदाय और संगीत। प्रिन्टवेल, जयपुर, 1994।
17- सक्सेना, राकेश बाला। मध्ययुगीन वैष्णव सम्प्रदायों में संगीत। राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1990।
18- सक्सेना, राकेश बाला। ब्रज के देवालयों में संगीत परंपरा। संगीत कार्यालय, हाथरस (उ.प्र.), 1997।